ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

Volume - 5 | Issue - 6 | January - 2018

REVIEWS OF LITERATEURE

UGC APPROVED

International Recognition Interdisciplinary Research Journal

Impact Factor	ISSN
3.3754(UIF)	2347-2723

'आज के सामाजिक सवाल और हिन्दी व्यंग्य साहित्य'

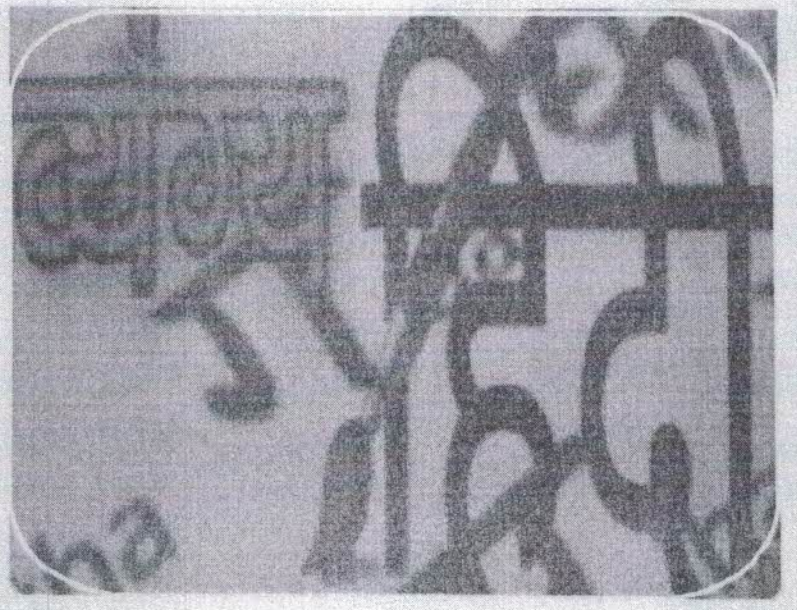

Research by

डॉ. संतोष विजय येरावार

संतोष विजय येरावार

हिंदी विभाग प्रमुख, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर, ता.देगलूर जि. नांदेड

सारांश :– व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास में बाधित होने वाले सभी सवालों को हिंदी व्यंग्य विधा ने अत्यंत प्रखरता, गंभीरता, सूक्ष्मता, तीव्रता, और सजगता के साथ उजागर किया है। सोई हुई चेतना को झकझोर कर मानवीय जागरूकता ....

Editor - In - Chief - Dr. Chandravadan Naik

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

EDUCATION SOCIETY'S
COLLEGE, DEGLOOR
Dist.Nanded

REVIEWS OF LITERATURE

ISSN: 2347-2723 Impact Factor : 3.3754(UIF)

Volume - 5 | Issue - 6 | January - 2018

Content

Sr. No	Title and Name of The Author (S)	Page No
1	IMAGES AND WOMEN IDENTITY IN CHITRA BANERJEE DIVAKARUNI NOVELS M. Kashi Ram and Veera Swamy T.	1
2	NEED AND EFFECTIVENESS OF DIGITAL MARKETING Dr. Suresh Kumar Jain and Payal Chhabra	4
3	PUBLIC RELATIONS IN MULTI-SUPER SPECIALTY HOSPITAL: MEDANTA - THE MEDICITY Dr. Ramesh Chandra Pathak and Mr. Narmadesh Chandra Pathak	10
4	FUNCTIONING OF WATER USERS ASSOCIATIONS IN UNITED ANDHRA PRADESH – A STUDY Dr. Surasi Krishna	14
5	अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में नव मुसलमानों के विद्रोह : एक सामान्य विवेचन डॉ. नीरज कुमार गौड़	23
6	'आज के सामाजिक सवाल और हिन्दी व्यंग्य साहित्य' डॉ. संतोष विजय येरावार	26

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist.Nanded *

REVIEWS OF LITERATURE
ISSN: 2347-2723
IMPACT FACTOR : 3.3754(UIF)
VOLUME - 5 | ISSUE - 6 | JANUARY - 2018

'आज के सामाजिक सवाल और हिन्दी व्यंग्य साहित्य'

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख , देगलूर महाविद्यालय, देगलूर , ता.देगलूर जि. नांदेड.

प्रस्तावना

व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के विकास में बाधित होने वाले सभी सवालों को हिंदी व्यंग्य निबंध ने अत्यंत प्रखरता, गंभीरता, सुक्ष्मता, तीव्रता, और सजगता के साथ उजागर किया है। सोई हुई चेतना को झकझोर कर मानवीय जागरूकता उत्पन्न करने का साहसी प्रयास हिंदी व्यंग्य निबंध ने किया है। सामाजिक विकृतियों, विंडबनाओं, विद्रुपताओं और सवालों से लडने हेतु शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, लतीफ घोंघी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, नरेन्द्र कोहली आदि निबंधा कारोने व्यंग्य रूपी हथियार अपनाए। वह अन्य हथियारों से कही जादा अधिक प्रभावी सिध्द हुए है।

"हिन्दी व्यंग्य निबन्ध समग्र कृतियों एवं दोगलेपन का जीवंत दस्तावेज है।" जीवन की चौतरफा विसंगतियों, दुर्बलताओं, सवालों एवं विद्रुपताओं का पर्दाफाश करना सामाजिक नवनिर्माण का उत्कृष्ठरूप होता है और यह सामाजिक नवनिर्माण का कार्य हिन्दी व्यंग्य साहित्य ने प्रतिबध्दता से किया है। व्यंग्य ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, संस्कृतिक, आर्थिक एवं परिवारिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगति,विकृति, आडंबर एवं सवालों को उजागर किया है।

सामाजिक विषमता, सामाजिक मुल्यों का पतन, मानवी सभ्यता एवं मान्यताओं का हनन, संस्कृति का दमन, दहेजप्रथा, विवाह प्रणाली में व्याप्त दिखावा, वृध्दम माता पिता के प्रति युवकों का बदलता दृष्टिकोण, प्रदुषण की समस्या, गरीबों एवं हरिजनों की दयनीय अवस्था, किसानों की एवं स्त्रीयों की शोचनीय अवस्था, मध्यवर्ग की संदिग्ध एवं अस्थिर मनोवृत्ती, भाषावाद, प्रांतवाद, समाजवाद, आदिवासीयों की दयनीय अवस्था, बेकारी, आतंकवाद, सांप्रदायीकता, भ्रष्ट्राचार, बढती गुन्हेगारी, बलात्कार, मँहगाई, व्याभिचार, धार्मिक कर्मकाण्ड, वर्ण व्यवस्था एवं जाति पाति आदि अनेको सामाजिक सवालों को उद्घाटित करने का कार्य हिन्दी व्यंग्य साहित्य ने अत्यंत गंभीरता के साथ किया है। व्यंग्य साहित्य सामाजिक यथार्थ के और सामाजिक सवालों के प्रव्याख्यान का साहित्य है। "समाज से अपनी प्रेरणाऍं ग्रहण करने, समाज की विसंगतियों एवंविकृतियों को अपना लक्ष्य बनाने और सामाजिक प्रश्नों से इसका करिबी रिश्ता है। व्यंग्य साहित्य का वास्तविक महत्व इस बात से निहित है किवह अपने युगीन समाज की उसकी पूर्ण विशदता, गहनता, व्यापकता और वास्तविकता में तमाम विसंगतियों, विकृतियों एवं विरूपताओं के साथ उद्घटित ही नही करता बल्कि समाज को सुन्दर एवंबेहतर बनाने के लिए एक सामाजिक सफाईकर्ता और मार्गदर्शक के दायित्व का निर्वाह भी करता है। हिन्दी व्यंग्य निबंधो ने सामाजिक सवालों को तो बडी सजगता के साथ उजागर किया है परंतु सवालों के परिपूर्ण उत्तर देने का स्तुत्य प्रयास भी किया है। तथा जनमानव को सचेत एवं जागृत करनें का अमूल्य कार्य भी किया है जो व्यंगकारों की सामाजिक प्रतिबद्घता को दर्शाता है। जो साहित्य समाज और समाज में व्याप्त सवालों को अपने साहित्य के केंद्र में समाविष्ट करता है वही साहित्य जननमानव से जुडता भी है और अजरामर भी होता है। हिन्दी व्यंग्यकार की तिखी और पैनी नजरें सामाजिक जीवन में गहराई से उतरकर सामाजिक वास्तविकताओं सवालों एवं मान्यताओं के सूक्ष्म विश्लेषण का सामर्थ्य रखती है। अतः व्यंग्यकार सामाजिक विषमता, विकृतियों एवं विसंगतियों के प्रति सर्वाधिक सचेत और चिंतनशील रहता है। सामाजिक व्यवस्था और जीवन में जहॉं कहीं भी विकृतियॉं, विद्रुपता, ढोंग, अन्याय अत्याचार, छल कपट, धूर्तता, चारित्रिक पतन शोषण एवं असभ्यता नजर आई तो व्यंग्यकार ने अपना सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने हेतु व्यंग्य का हाथियार लेकर इन बुराईयों पर टुट पडे। संसार और समाज की बहुत सी गन्दगी को साफ करने के लिए व्यंग्यकार प्रकाश डालता है।" मानव मात्र के सामुहिक सुधार का उद्देश व्यंग्य हैं।"[1]

आतंकवाद, भाषावाद, प्रांतवाद एवं जमातवाद, सांप्रदायिकता यह आज के महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। जो भारतीय लोकतंत्र तथा राष्ट्रीय एकात्मता को खंडित कर रहेहै। संकुचित देश भक्ति, एवं परस्पर द्वेष इसी के कारण निर्माण हो रहा है। संपूर्ण भारत वर्ष को खोखला बनाने का कार्य भी इन्ही समस्यांओ के द्वारा हो रहा है। परस्पर अविश्वास का माहोल निर्माण होने के कारण समाज एवं राष्ट्र के विकास में बाधा निर्माण हो रही है। राजनीति के जहरीले माहौल ने संपुर्ण समाज को

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Affiliated

भी घिनौना, विकृत, दुषित एवं अभाव ग्रस्त बना दिया है। कुछ भारतीय राजनेता अपने स्वार्थ की रोटी सेखने के लिए सत्ता पाने के लिए आतंकवाद, भाषवाद, प्रांतवाद, जमातवाद को बढावा दे रहे हैं।

आतंकवाद आज संपुर्ण विश्व का गंभीर प्रश्न बन गया है। अनेक राष्ट्रों में आतंकवाद ने नंगा नाच किया है, जिससे हजारों बेकसुर नागरिकों के प्राण जा रहे है। विभिन्न राष्ट्रों की आतंकवाद समर्थन नीति के कारन सर्वत्र आतंक और डर का माहौल है। जिन राष्ट्रों ने आतंकवाद रूपी अजगर को पाला है वही अजगर आज उन्ही राष्ट्रों को निगल रहा है उन्हें कुचल रहा है। पाकिस्तान आस पास के देशों में आतंक फैला कर, धर्म के नाम पर लोगों को भडका कर अपनी राजनीतिक महत्ता बढाने का प्रयास कर रहा है। जिसके कारन आतंकवाद भारत को भी प्रभावित कर रहा है। जिस पाकिस्तान ने आतंकवाद को सहारा दिया वही आतंकवाद का जहर पाकिस्तान के अस्तित्व पर सवालिया निशान बन कर खडा हो गया है। धर्म के सहारे अवाम को एकत्रित रखने की कोशिश के कारन वह अपने ही बनाए दलदल में फॅस रहा है।भारत को अस्थिर बनाने की कोशिश पाकिस्तान हमेशा से करता आ रहा है, पाकिस्तान की इस घिनौनी चाल पर शरद जोशीने व्यंग्य कसा है। "अमरीका के तलुए चाट नई से नई तोपे, टैंक और हवाई जहाज अपने कटोरे में बटोरना भी मुश्किल नहीं। हुकूमत के तहत गरीबों की पीठ पर हंटर मारना भी सरल है धर्म के नाम पर पूरी पब्लिक जानी जा सकती है। ब्लैक मनी के लिए अफीम और हाशिश भी स्मगल की जा सकती है। हिन्दुस्तान के हद में घुसपैठिए भी छोडे जा सकते है। लालच देकर झुठे सपना दिखा कुछ सिरफिरों को आतंकवादी बनने की ट्रेनिंग भी दि जा सकती है।"[2]

देश की अखंडता एवं एकता को साम्प्रदायिकता से भी खतरा है। साम्प्रदायिकता भी समाज
का ज्वलंत प्रश्न है। "साम्प्रदायिकता यह आधुनिक युग की देन है।"[3] भारत में साम्प्रदायिक दंगे आऐ दिन हो रहे है। साम्प्रदायिकता यह राष्ट्रीय जीवन में महामारी के समान है। साम्प्रदायिकता के मूल में धार्मिक मतभेद दूसरों के धार्मिक स्थलो का अपमान, महापुरूषों देवी–देवतावों का विटबन है। साम्प्रदायिक दंगो के मूल में राजनीतिक और आर्थिक हित उत्तरदायी होते है। सांप्रदायिकता को सत्ता तक पूॅहचने की सीढी बनाया गया है। हरिशंकर परसाई साम्प्रदायिकता के कारणें को उघाडते है। धर्म के नाम पर होने वाले आयोजनों की वास्तविकता को परसाई जीने 'महायज्ञ या पाखण्ड यज्ञ' मे उघाडा है" यज्ञों के आयोजन की प्रेरणा देनेवाले होते है मठाधीश लोग। इनके साथ होते है अनेक साधु, पण्डित, सेठ, साहुकार और पूंजीपति लोग। लेकिन असल में जिन लोंगो का यह गौरखधंधा होता है, वे है साम्प्रदायिक नेता जो संकीर्ण साम्प्रदायिकता को जगाकर सत्ता हथियाना चाहते है।"[4]

सांम्प्रदायिकता के सहारे सत्ता में आए राजनेता सत्ता में बने रहने के लिए दंगे कराकर
अपना उल्लु कैसे सीधा करते है, इसे परसाई नें 'बेमिसाल' लेख में उघाडा है। "दंगो में शांति स्थापना का भी तरीका बन गया है। दंगाइयों को जिन्हे मारना है, उन्हें पुलिस खुद मार डालती है और कहती है– लो तुम्हारा काम हमने कर दिया, अब तुम शांत हो जाओ। घर और जलाना हो तो जरा कर्फ्यु में ही कर लेना। सब लोग कुछ भी चिल्लायें किसी पर कार्यवाही न होगी"। राष्ट्र की सबसे बडी विडम्बना यही है की राजनीतिक हित के लिए समाज को बॉटना, लोंगो को मारना, देश को तोडनेवाली ताकतों को खुली छुट देना यह सभी कार्य नेताओं के द्वारा धडल्ले से किए जा रहे है।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर सांम्प्रदायिकता की समस्या के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हुए इसमें
अमेरिकी साम्राज्यवाद की भूमिका का पर्दाफाश परसाई ने किया हैं। "मुसलमान–मुसलमान आपस में लडते है। शिया–सुन्नी दंगा हिन्दु–मुस्लिम दंगो से कम नहीं होता। ईरान और इराक लड रहे है, इजिप्त और लीबिया एक दूसरे पर बम बरसा रहे है। मगर बाहर के ये मुसलमान नेता विश्व इस्लामिक बिरादरी और राष्ट्रीयता के नारे से उन देशों के मुसलमानों को, जहा वे अल्पसंख्यक है, राष्ट्रीय मुख्यधारा में मिलने से रोकने की कोशिश करते है। साधा, इसके साथ ही अमेरिका, चीन और पाकिस्तान की राजनीति का जाल है। इनके जो एजेंट उत्तर–पुर्व में गडबडी करवा रहे है वही इधर दंगे करवा रहे है। ये एजेंट उत्तर पूर्व में ईसाई और इधर मुसलमान या हिन्दु ही हों, ऐसा नहीं है। हम देश के आंतरिक प्रतिकिया वादी और बाहर के अमेरिकी सामाज्यवादी षडयंत्र में फंसे हुए है और ये दोनों अपने गंन्दे खतरनाक हाथ मिलाये हुए है।"[5]

साम्प्रदायिकता को वे पूॅजीवादी–साम्राज्यवादी व्यवस्था के एक ऐसे अस्त्र के रूप देखते है जिसका प्रयोग दलित व शोषित वर्ग की एकता को तोडने के लिए किया जाता है। सम्प्रदाय के आधार पर शोषित वर्ग में फुट डालने के इस प्रवृत्ति पर परसाई करारी चोट करते है, "ये संगठन शोषक और शोषित, गरीब और अमीर की लडाई को बदलकर हिन्दु–मुसलमान की लडाई बनाते है, जिससे शोषक हिन्दु और मुसलमान दोनों में उत्तेजना फैलाते हैं। और मस्जिद, गाय और सुअर ऐसे ही प्रतीक है, जिनके बहाने भडकाया जात है।" भारत में सांप्रदायिकता यह सत्ता के संरक्षण में पली है जों संपूर्ण जनमानस को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और पारिवारीक क्षेत्र में प्रभावित करती है। "सत्ता से बडी चरित्र ठीक करने वाली कोई दवा आज तक नहीं निकली है और न कभी निकलेगी।"[7] सत्ता यह नेताओंको चरित्र हिन एवं पतीत होने के बावजुद चरित्र संपन्न बनाती है।

आज भारतीय लोकतंत्र तथा राष्ट्रीय एकता को जो बाते खण्डित कर रही है उनमें भाषावाद, प्रांतवाद एवं जमातवाद आदि महत्वपूर्ण है। इन्ही उल्झनों के कारण तथा आपसी द्वेष भावना के कारण ही देश भक्ति पर सवाल उठ रहे है। हाल ही में शपथग्रहण के दौरान जो भाषावाद हुआ वह लोकतंत्र तथा एकात्मता के लिए कलंक है। यह सब भारतीय राजनीति का परिणाम माना जाएगा। क्योंकि हर नेता अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए उसे बढावा दे रहा है। बुनियादी समस्याओं से अवाम का ध्यान हटाने के लिए नेताओं द्वारा विविध प्रकार के घिनौने खेल खेले जाते है। यह वाद भी उसी का हिस्सा है। राष्ट्रीय संपत्ति को हानी पहुॅचाना, लुटमार आतंक एवं डर यह सब इसके लिए जायज माने जाते है। इस पर शरद जोशी ने करारा व्यंग्य कियाहै।" देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में मराठी भाषी और गैर मराठी भाषीकों में संघर्ष कोई नई बात नही हैं आजादी के बाद कुछ सालों में यह विवाद नेताओं ने अपने स्वार्थ के लिए प्रारम्भ करना शुरू किया। अपनी भाषा के प्रभुत्व के लिए किसी गैर भाषा के प्रति घृणा करना आज नेताओं की मजबुरी हो गई है बार बार जनता की ऑखो में धुल डालकर उन्हें शिकार बनाया जा रहा है। भाके विवाद

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

पर शरद जोशी ने कडा विरोध करते हुए लिखा है– "जो सुखा है, वह सुन्दर है, वह मुंबई है। शेष जोगंदा है, बम्बई है, ऑक्सिजन का कारण मराठी भाषी है। नाईट्रोजन और कार्बन–डायऑक्साइड का कारण गैर मराठी है। गुलाबों की वजह वे है, कांटो के कारण गैर है। भारत की पृथ्वी का यह भाग उनका है। यहाँ की हवा उनकी है। सागर उनका है।"[8]अपनी भाषा का आदर करना अच्छी बात है। परंतु हमे दूसरी भाषाओं का भी आदर करना चाहिए तभी संघर्ष समाप्त होगा। यह संदेश शरदजी ने इस कथन के माध्यम से दिया है।

दक्षिण भारत में भी हिन्दी–विरोधी नारे दिए जाते है। यह सब संकीर्ण दिमाग की उपज है। हिन्दी–विरोधी का अर्थ अपनी मातृभाषा की सेवा हैतो हिन्दी भाषी उनकी भावना का समर्थन करेगे, परंतु वदनसिबी यह है कि, हिन्दी के विरोध का अर्थ है अँग्रेजी की सेवा। शरदजी का मानना है कि, भाषा केवल भाषा के स्तर पर अपनी विशेषताएँ खोजे तो उसे यह जानकर धक्का लगेगा कि जो गुण उसमें है, वे अन्य अनेक भाषाओं मे कई मामालों में है। ऐसे में भाषाई संघर्ष गर्व का विषय नही होगा। जनता को सचेत कर अखंडता खंडीत न होने का उनका प्रयास सराहनीय है। उनकी समन्वय भावना देखिए– "कन्याकुमारी की अंतिम चट्टान पर खडे हो आप एक विराट समुद्र देखिए। दाहिनी ओर का समुद्र अरब सागर है सामने का हिन्द महासागर और बाई ओर बंगाल की खाडी। पानी जुडा है, नाम अलग–अलग है। विराट जन–सागर है, यह भ्रांति है।"[9] हमे विभिन्नता को छोड समानताके तत्व जुडना है। जिस तरह पानी जुडा है उसी तरह भाषा भी एक–दुसरे से जुडी हुई। भाषाई भ्रम त्याग व्यापक दृष्टिकोन अपनाना चाहीए तभी राष्ट्रीय एकात्मता और अखंडता बरकरार रहेंगी।

इस देश में किसी की जाति या प्रांत पूछना सभ्यता के विरूध्द है, परंतु असभ्यता हीह सभ्यता बन गई है। केंद्र के प्रांतीयता को शरदजीने उघाडते हुए कहा है– "अहमदाबाद का आंदोलन, दंगे, आगजनी, मृत्यु सब मुख्यमंत्री सोलंकी को हटाने और न हटाने की स्थानीय राजनीति है। अकालियों की भभकियाँ राष्ट्रीय एकता और अखंडता को गंभीर चुनौती है। अहमदाबाद में स्थिति नियंत्रण में बताई जाती है और पंजाब का मामला हमेशा गर्म और उबलनेवाला माना जाता है। वाह रे केंद्र, कितना प्रांतिय है तु।"[10] केंद्र का उत्तरदायित्व होता है कि, वह राष्ट्र की अखंडता बनाए रखे परंतु विडम्बना यह है कि केंद्र ही उखंडता को खंडित करने में लगा है। हमें धर्म और जाति पर गर्व एवं घमंड नही होना चाहिए, क्योंकि वह होने के लिए अपनी ओर से कुछ नही किया जाता है, जो हमारे प्रयत्नों से अर्जित होता है। आप लेखक, खिलाडी, समाज सेवक या व्यापारी है तो अपने कार्यापर गर्व किजिए, परंतु हम अपनी धर्म और जाति पर गर्व करते है। इस मानसिकता पर शरदजीने व्यंग्य करते हुए कहा है– "आप किसी हिंदू से पूछे कि आप कौन है तो वह गर्व से कहेगा, मै कायस्य हुँ, राजपुत हुँ, या बाह्मण हुँ।"[11] अतः यह कहा जा सकता है कि, शरदजी ने राष्ट्रीय एकात्मता को बनाए रखने की दृष्टिसे एक समन्वयक की भूमिका निभाई है। कुदरत कोई भेदभाव नही मानता तो हमे भी कोई भेदभाव नही मानना चाहिए यह अनमोल उपदेश शरदजीने दिया है। उनका राष्ट्र निर्माण का कार्यअत्यंत सराहनीय है।

"भारत माता की उपरी नेडियाँ कट कई हैं, लेकिन भीतर की जर्जरावस्था ज्यों–की–त्यों बनी हूईहैं। ..... रोग, आशिक्षा, कुरीति, और अविश्वास से इस देश की कोटी–कोटी जनता आज भी जर्जर और पीडित हैं।"[12]नारी की दयनीय अवस्था भारतीय समाज की इसी सोच का नतीजा है। आझादी के इतने वर्षो बाद भी नारी जीवन के सवाल आज भी सवाल ही बने हुए है। नारी जाती के प्रति भारतीय समाज का व्यवहार भेदभाव पूर्ण है। संत्रास, पीडा, वेदना, दुःख, और अभाव से भरा हुआ जीवन स्त्रीयों की पहचान बन गई है। दुःख, और अभाव से भरा हुआ जीवन स्त्रीयो की पहचान बन गई है। स्त्री को समानता के अधिकार से सदियों से वंचित रखा गया है और उसे उपभोग, विलासिता, संततीप्राप्ति, तक ही सिमित रखा गया है। सामाजिकता का खण्डंन एवं नैतिकता का निरन्तर स्खलन आज के मानव एवं समाज की ज्वलंत समस्या बनी हुई है।"[13] स्त्री इसी मानसिकता का शिकार हो शोषण का हिस्सा बन रही है। भारतीय समाज में नारी को शोषन का हिस्सा बनना या आत्महत्या करना यह दो ही पर्याय दिये है। उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नही है। विवाहीत स्त्रियों के प्रश्न कामकाजी स्त्रियों के प्रश्न, विधवा स्त्रियों के प्रश्न, कुमारी मॉताओं के प्रश्न, वैश्यावृत्ती की मजबुरी, आर्थिक परनिर्भरता, पुरषो की वासना भरी दृष्टी आदि अनगिनत प्रश्न स्त्रियों के सामने है। कुवॉरी बिना मॉ की लडकी की तरफ देखने की भारतीय पुरषो की मानसिकता और उसकी स्थिती को हरिशंकर परसाई ने उजागर किया है। "बिन मॉ की जवान लडकी ऐसी फसल होती है, जिसका रखवाला नहीं है और जिसे वासना के उजाडु पशु चरने को स्वतंत्र है।"[14] स्त्री को भोग्या मानने की प्रवृत्ति पर परसाई ने व्यंग कसा है।

नारी जाति के प्रति हरिशंकर परसाई का दृष्टिकोण विशुध्द मानवता वादी रहा है। "वे नारी को सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का उतना ही जरूरी अंग मानते है जितना कि पुरूष को"[15] हिन्दु धर्म में नारी की स्थिती जिस तरह से दयनीय है उसी तरह से मुस्लिम समाज में भी है। इस्लाम के कोडे लेखा में परसाईजी ने पुरूष द्वारा अनेक पत्नियां रखने को धर्म सम्मत बताने वाले मुल्लाओं की खबर ली है, "औरत भूख के कारण वैश्या होती है। और जरा उन मुल्ला लोंगो से पूछा जाये, जो तीन बीवियों रखे हैं। जनाब एक बीवी तो काफी हुई आपके साथ सोने, रोटी बनाने और बच्चा पैदा करने के लिए, फिर ये बाद की दो बीवीयां किस लिए? ये तो रण्डिया ही हुई न, जिन्हे आपने रोटी–कपडे पर रख छोडा है, आपके जिस्म की ख्वाहिश पूरी करने के लिए।"[16]

पुरूष एक से अधिक विवाह कर सकता है, पत्नी के होते हुए रखैले रख सकता है, विधुर हो जाए तो दूसरा विवाह कर सकता है, वासना भरी नजर से पराई औरतों को ताक सकता है। किन्तु स्त्री से अपेक्षा की जाती है कि वह हर हालत में पति को परमेश्वर मानकर जीवन भर उसकी दासी बने रहे। वर्तमान समय में अनेको सामाजिक सवाल है जिसे व्यंग्य साहित्य ने उजागर किया है।

DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

सारांश

वर्तमान में मानव अशांत होने के कारण उसे वास्तविक और यथार्थ साहित्य अपने से जुडा हुआ लग रहा है और वह साहित्य में अपना तथा अपने आसपास के सवालों का सच्चा रूप देखने का प्रयास कर रहा है। व्यंग्य साहित्य यह केवल वर्तमान समाज में व्याप्त प्रश्नों एवं अन्तविरोध को उजागर ही नहीं करता बल्कि उससे लडने की क्षमता भी निर्माण करता है। व्यंग्य मानव समाज को सवालों के प्रति सचेत करने का कार्य करता है। व्यंग्य साहित्य हमेशा ऐसी ही परिस्थिती की तलाश में होता है जहॉ विसंगति, शोषण, विडम्बना, धार्मिक एवं सामाजिक आडम्बर, सामाजिक एवं वर्गीय शोपन तथा मानव मूल्यों एवं आदर्शों का ऱ्हास होता है। व्यंग्य समस्या पर तीखा, तीष्ण एवं तीव्र प्रहार करता है और उसके पती मानवीय मास्तिष्क को झकझोरता है।व्यंग्य जीवन को अधिक स्वस्थ, अधिक सुन्दर, बनाता है। भ्रष्ट, कलुषित, परम्पराओं, रीतियों और धारणाओं पर प्रहार करता है। व्यंग्य सामाजिक सवालों को उठानें का सर्वाधिक प्रभावी अस्त्र है।

अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक, विषमता, सामाजिक मूल्यों का पतन, मानवी सभ्यता एवं मान्यताओं का हनन, संस्कृती में व्याप्त विकृतियॉ, धार्मिक आंडबर, सांस्कृतिक प्रदूषण, विवाह प्रणाली में व्याप्त दिखावा, दहेजप्रथा, वृध्द माता–पिता के प्रति युवकों का बदलता दृष्टिकोण, प्रेम का बदलता अश्लिल स्वरूप, प्रदुषण की अतीमात्रा, दहेजप्रथा, विधवा स्त्रीयों की दयनीय अवस्था, किसानों की जर्जर अवस्था, नारी का समाज में दुयम्म स्थान, मध्यवर्ग की संदिग्ध एवं अस्थिर मनोवृत्ति, भाषावाद, प्रांतवाद, जमातवाद, आदिवासीयों की दयनीय स्थिती, बेकारी, बढती गुन्हेगारी, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, बलात्कार, मॅहगाई, ढोग, पाखंड, वर्ण व्यवस्था सें व्याप्त जाति–पंति आदि अनेकों सवालो पर हिन्दी व्यंग्य साहित्य ने प्रखरता और गंभीरता के साथ प्रकाश डाला है। जनमानस को सामाजिक समस्याओं के प्रति सचेत कर समाज को शोषणमुक्त बनाने का प्रयास हिन्दी व्यंग्य साहित्य ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.स्वांतन्त्रोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबंध शशि मिश्रा, पृ–103
2.शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड – 1, पृ. 350.
3.सत्यसाची ;संद्ध : उत्तरार्ध, पृ. 36.
4.परसाई रचनावाली : खंण्ड चार, पृ. 358.
5.परसाई रचनावाली : खंण्ड पांच, पृ. 99.
6.परसाई रचनावाली : खंण्ड चार, पृ. 99–100
7. इस देश के लोग : रवीन्द्रनाथ त्यागी, पृ. 12.
8. शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड–2, पृ. 165.
9. शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड–2, पृ. 63.
10. शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड–1, पृ. 58
11. शरद जोशी, प्रतिदिन, खंड–2, पृ. 284
12. स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध, डॉ. शशि मिश्रा, पृ. 102.
13. स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध, डॉ. शशि मिश्रा, पृ. 102.
14. परसाई रचनावाली : खंण्ड दो, पृ. 94.
15. व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई की सामाजिक प्रतिबद्धता, संजय शर्मा, पृ. 162.
16. परसाई रचनावाली : खंण्ड चार, पृ. 99–100.
17. लक्ष्मीनारायण नंदवाण, राजस्थान के हास्य व्यंग्यकार
18. प्रेमनारायण शुक्ल, हिन्दी साहित्य में विविध वाद.

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख , देगलूर महाविद्यालय, देगलूर , ता.देगलूर जि. नांदेड.

DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

2019

IMG-20180314-WA0005.jpg

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
quality higher education for all

Home | About Us | Organization | UGC Bureaus | Universities | Colleges | Publications | Stats

UGC Approved List of Journals

You searched for r

Total Journals : 1434

Show 25 entries Search 23472723

View	Sl.No.	Journal No	Title	Publisher	ISSN	E-ISSN
View	1315	48385	Reviews of Literature	Ashok Yakkaldevi 258/34,Raviwar Peth, Solapur 413005 Maharashtra, India Phone No 02172372010, e-mail: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org	23472723	

Showing 1 to 1 of 1 entries (filtered from 1,434 total entries) Previous 1 Next

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded